Page No.
Date : / /

फसल की गहनता (Intensity of Cropping)

→ Eco. Survey → कृषि की उत्पादकता

- अर्थ
- गहनता में वृद्धि की आवश्यकता क्यों ?
- निर्धारित करनेवाले कारक
  - प्राकृतिक
  - संरचनात्मक
  - संस्थागत
- वितरण प्रतिरूप
- निष्कर्ष
- गहनता
  - शुद्ध बोया गया क्षेत्र
  - सकल बोया गया क्षेत्र

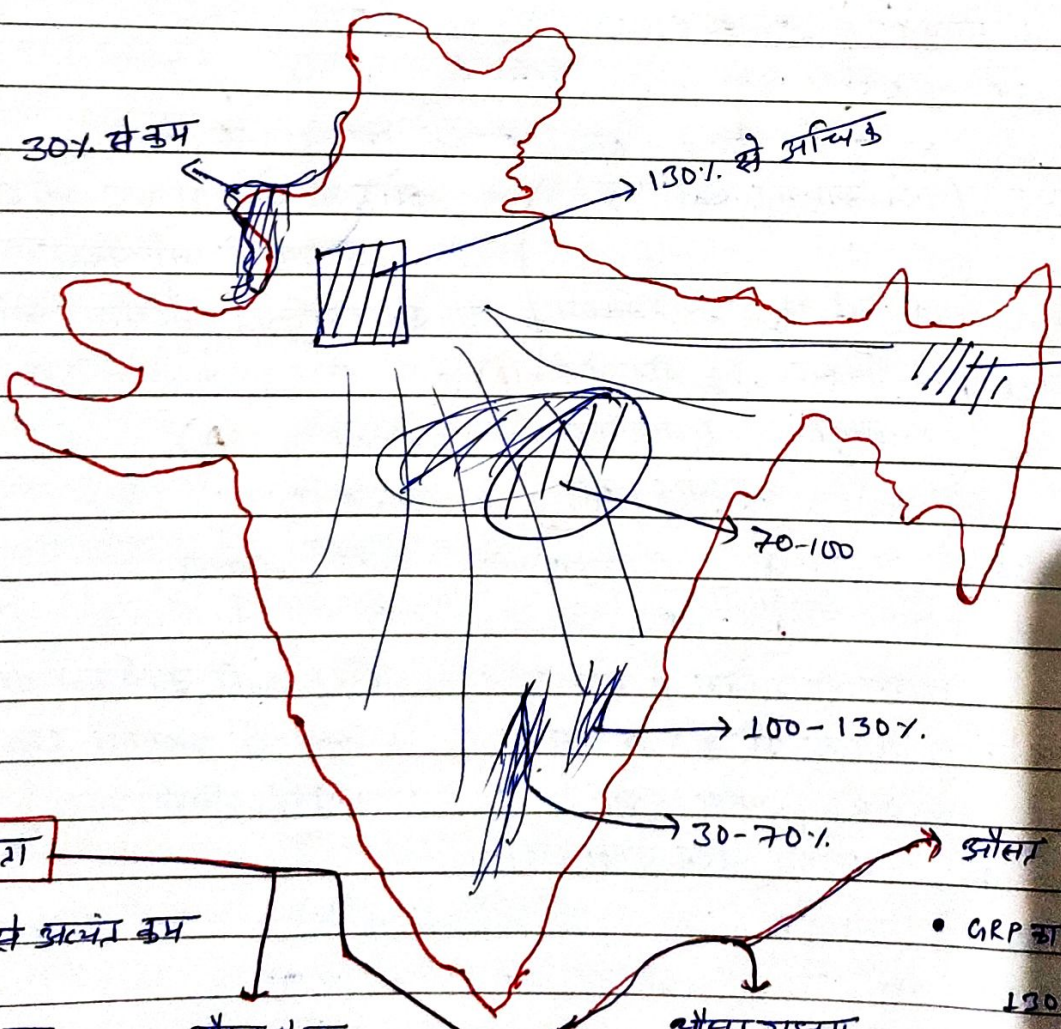

गहनता

- औसत से अत्यंत कम
  - 30% से कम
    - पर्वतीय
    - मरुस्थलीय
- औसत से कम
  - 30-70%
    - सूखा ग्रसित क्षेत्र
    - शुष्क कृषि क्षेत्र
- औसत गहनता
  - 70-100%
    - 100 cm से अधिक वर्षा
    - आधारभूत सुविधा का अभाव
- औसत से अधिक गहनता
  - GRP का प्रथम चरण सफल
    - 130% से अधिक
  - 100-130% गहनता
    - पूर्वी व दक्षिणी भाग के राज्य
      - GRP का 2nd Phase सफल

Page No.
Date : / /

→ फसल की गहनता का तात्पर्य एक कृषि वर्ष में बोकर काटे गए फसलों की बारंबारता से है जिसका आकलन शुद्ध बोया गया क्षेत्र और सकल बोए गए क्षेत्र के अनुपात के आधार पर दशमलव या प्रतिशत के रूप में किया जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहां कृषि योग्य भूमि की सीमित उपलब्धता है वहीं दूसरी तरफ जनसंख्या में वृद्धि के कारण न केवल कृषि योग्य भूमि का अतिक्रमण हो रहा है बल्कि खाद्यान्न फसलों की मांग & आपूर्ति के अंतराल में भी वृद्धि हो रही है। ऐसी स्थिति में सीमित कृषि योग्य भूमि का गहन उपयोग कर प्रति हेक्टेयर उत्पादन को बढ़ाकर खाद्यान्न फसलों की मांग & आपूर्ति के अंतराल को कम करने के साथ भविष्य में भी के लिए भी खाद्य सुरक्षा के उद्देश्य को सुनिश्चित किया जा सकता है।

भारत में फसल की गहनता के वितरण मानचित्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जहां कृषि के विकास के लिए प्राकृतिक बाधाओं को दूर करते हुए ~~@~~ Infra. के स्तर पर सिंचाई की सुविधाओं को उपलब्ध कराने के साथ उन्नत किस्म के बीजों और रासायनिक उर्वरक के प्रयोग को प्राथमिकता दी गई वहां कृषि से संबंधित संस्थागत व्यवस्था के अंतर्गत जोत के बड़े आकार और स्थायी अधिकार की विशेषता थी ~~वहां~~ वहीं ~~...~~ आधारभूत सुविधाओं का अनुकूलतम उपयोग होने के कारण फसल की गहनता औसत से अधिक (130% से अधिक) है। इस प्रकार के क्षेत्र का संबंध ~~@~~ GRP के

प्रथम चरण से लाभांवित पश्चिमी U.P, पंजाब & हरियाणा के मैदान, राजस्थान का गंगानगर, हनुमानगढ़ जिला, पूर्वी और दक्षिणी भारत के राज्यों में Infra. के स्तर पर सुधार किए जाने के बावजूद जोत के छोटे आकार और अस्थायी अधिकार से संबंधित संस्थागत जटिलताओं के कारण GRP के सफल होने के बावजूद फसल की गहनता उत्तर पश्चिमी भारत के राज्यों के अपेक्षा कम है।

पूर्वी और दक्षिणी भारत के राज्यों में जहां औसत से अधिक वर्षा होती है वहां आज भी Infra. के स्तर पर सिंचाई की बेहतर सुविधाओं के नहीं होने के कारण वर्ष भर कृषि योग्य भूमि का अनुकूलतम उपयोग नहीं हो पाता है जिससे फसल की गहनता लगभग >0% से 100% तक है।

आज भी भारत के अधिकांश औसत से कम वर्षा वाले क्षेत्र जहां सिंचाई की सुविधाओं का अभाव होने के कारण वर्षा पर आधारित कृषि की जाती है वहां अधिकांश समय कृषि योग्य भूमि को खाली छोड़े जाने के कारण फसल की गहनता औसत से कम 30-70% तक है। भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में जहां धरातलीय विषमताएं है वहीं मरुस्थलीय क्षेत्रों में जहां कृषि अयोग्य बंजर भूमि की अधिकता है वहां अधिकांश भूमि का उपयोग कृषि कार्यों के लिए नहीं किए जाने के कारण फसल की गहनता औसत से भी कम है।

इस प्रकार भारत में स्वतंत्रता के बाद संस्थागत स्तर पर सुधार किए जाने के साथ

Page No
Date :

Intra. के स्तर पर विकास को प्राथमिकता दिए जाने के कारण जहां राष्ट्रीय स्तर पर फसल की औसत गहनता में वृद्धि के साथ गेहूं और चावल जैसी अनाज फसलों की उत्पादकता में अप्रत्याशित दर से वृद्धि होने के कारण GRP सफल हुआ वहीं फसल की गहनता में क्षेत्रीय विषमता बढ़ने के कारण न केवल कृषि की उत्पादकता में स्थानीय विभिन्नता है बल्कि आज भी भारत के अधिकांश क्षेत्र में फसल की गहनता औसत से कम है जो न केवल राष्ट्रीय स्तर पर कृषि की उत्पादकता के कम होने का एक महत्वपूर्ण कारण है बल्कि कृषि के उत्पादन में होनेवाले उतार-चढ़ाव का संबंध भी औसत से कम गहनता वाले क्षेत्र से है।

% → गहनता

Per hect. → Productivity

Mapping
↓
क्षेत्र पर आधारित भूगोल
(Present)